PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Geography

Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

पटना में कबाड़ एकत्र करने वालों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन

• Richa Patel • Rinku Rikita • Swarnlata Kumari

• Awadhesh Kumar

Received : November 2013
Accepted : March 2014
Corresponding Author : Awadhesh Kumar

Abstract : प्रस्तुत शोध पत्र का विषय पटना में कबाड़ एकत्र करने वालों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन है, जिसे पटना शहर में किया गया है। इसके लिए पटना के इलाकों जैसे :– बोरिंग रोड, राजापुल, आशियानामोड़, दीधा, गाँधी मैदान को चुना गया। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य कबाड़ चुनने वालों की सामाजिक–आर्थिक दशा, उनके शिक्षा, आवास, कार्यप्रणाली स्वास्थ्य एवं कार्य स्थल से संबंधित जानकारी इकट्ठा करना है। इसके लिए 50 कबाड़ चुनने वालों को चुना गया, जिसमें हर उम्र की स्त्री, पुरूष एवं बच्चे शामिल थे । उनके जवाब के आधार पर आँकड़े तैयार किये गए एवं उनके आधार पर यह शोध पत्र तैयार किया गया । इस शोध कार्य के दौरान यह बात सामने आई कि कबाड़ चुनने वालों की सामाजिक आर्थिक दशा बेहद कमजोर होती है। ये अशिक्षा, गरीबी, गंदगी, अव्यवस्था, अंधविश्वास, दुर्व्यसनों आदि के शिकार होते हैं । ये अपने अधिकारों तथा मिलने वाली सुविधाओं से भी अनभिज्ञ होते हैं। न ही सरकार ने और न ही समाज ने शहर के अर्थव्यवस्था तथा वातावरण की रक्षा में इनके योगदान को स्वीकार किया है। यद्यपि कबाड़ चुनने वाले प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में ठोस कचरा प्रबंधन से जुड़े हैं। शहर की अर्थव्यवस्था के विकास के लिए असंगठित तथा संगठित दोनों क्षेत्रों की इकाईयों का परस्पर कार्य करना बेहद आवश्यक है। इसलिए कबाड़ चुनने वालों को व्यर्थ समझने की बजाय हमें उन्हें समाज के एक हिस्से के रूप में स्वीकार करना चाहिए । कबाड़ चुनने की प्रक्रिया को निर्देशित तथा प्रबंधित करने के लिए सरकार की तरफ से औपचारिक पहचान की सख्त जरूरत है।

संकेत शब्दः– ठोस अपशिष्ट, पुनःउपयोग, स्वास्थ्य जोखिम, सामाजिक आर्थिक विकास।

Richa Patel
B.A. III year, Geography (Hons.), Session: 2011-2014,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

Rinku Rikita
B.A. III year, Geography (Hons.), Session: 2011-2014,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

Swarnlata Kumari
B.A. III year, Geography (Hons.), Session: 2011-2014,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

Awadhesh Kumar
Assistant Professor, Department of Geography,
Patna Women's College, Bailey Road,
Patna – 800 001, Bihar, India
E-mail : awadhesh.pwc.@gmail.com

परिचयः

'कबाड़ चुनने वाला' उन लोगों के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द है जो कचरे में से पुनः चक्रण के योग्य वस्तुओं को इकट्ठा करते हैं। कबाड़ चुनने की प्रक्रिया में कबाड़ इकट्ठा करना, छाँटना तथा बेचना शामिल है। एकत्र की जाने वाली वस्तुओं में मुख्यतः बोतल, गत्ता, धातु, कागज इत्यादि शामिल हैं (सिंह ए० एन, 1980)।

अधिकांश कबाड़ चुनने वाले समाज के पिछड़े वर्ग से आते हैं। जिसमें अनुसूचित जाति का प्रतिशत 81.6 है (एरिनपोर, जे, 1992) और उनमें से अधिकांशतः अप्रवासी होते हैं, जो बेहद गरीबी के कारण शहरी क्षेत्रों की तरफ आव्रजन करते हैं (त्रिपाठी एस.एन. 1996, भगवान दास, 1994) । ये कई प्रकार की बिमारियों से ग्रसित होते हैं, पर उन में से कुछ को ही स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं (देवी एल० 1998)। 75 प्रतिशत कबाड़ चुनने वाले बच्चे अपने परिवार के साथ रहते हैं। ये धूल, गर्मी, बारिश, हिंसा, सड़क दुर्धटना, शोषण आदि के शिकार होते हैं (Rialp V. 1993)।

UNESCO तथा भारतीय राष्ट्रीय आयोग के द्वारा सम्मिलित तौर पर कराये गए एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आई कि 28 प्रतिशत बाल श्रमिक कबाड़ चुनने के कार्य में संलग्न हैं। एक और अध्ययन के अनुसार नगर निगम के 4500 टन कचड़े का 5वाँ हिस्सा, 75000 कबाड़ चुनने वाले एकत्र करते है।

(Green Peace Investigator of U.S., 1996)

कबाड़ चुनने की क्रिया, समाज के गरीबतम तबके की आर्थिक क्रिया है। जब से पुनः चक्रणीय पदार्थों के बाजार में तेजी आई है, तब से शहरी गरीब भी जीविकोपार्जन के लिये कबाड़ एकत्र करने के लिये उन्मुख हो रहे हैं। कबाड़ चुनने वाले अधिकतर वे होते हैं जिनके पास अन्य आर्थिक क्रियाकलापों का कोई विकल्प नहीं होता । ये कठिन तथा दूषित वातावरण में कार्य करते हैं। समाज का नजरिया भी इनके प्रति काफी अनुदार है।

उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध-पत्र के मुख्य उद्देश्यों में कबाड़ चुनने वालों की सामाजिक-आर्थिक दशा का अध्ययन, उनके स्वास्थ्य पर पर्यावरण के प्रभावों का अध्ययन, उनके शिक्षा, आवास, कार्य प्रणाली तथा कार्य स्थल से संबंधित जानकारी इकट्ठा करना तथा इस कार्य में संलग्न बच्चों की दयनीय दशा का अध्ययन करना शामिल है।

परिकल्पना :

1. कबाड़ एकत्र करने वालों में सभी आयु वर्ग के लोग सम्मिलित हैं।
2. इनकी सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक योग्यता निम्न है।
3. यह मानवीय संक्रिया नगरीकरण के कारण उत्पन्न हुई है।
4. ये समाज तथा पर्यावरण के लिये अपमार्जकों की भूमिका निभाते हैं।
5. ये पुनःचक्रणीय वस्तुएँ चुनकर संसाधनों की बचत करते हैं।

विधितंत्र :

प्रस्तुत परियोजना कार्य तीन चरणों में पूरा किया गया है जो निम्नलिखित हैं:-

1. द्वितीयक आँकड़ों का संग्रह- पहले चरण में द्वितीयक आँकड़े एकत्रित किए गए, अध्ययन क्षेत्र का नक्शा तैयार किया गया, कबाड़ फेंके जाने वाले तथा खरीद-बिक्री वाले स्थानों की पहचान की गई तथा प्रश्नपत्र तैयार किया गया।

2. क्षेत्र-अध्ययन- इस चरण में तैयार किये गये प्रश्न-पत्र से अध्ययन क्षेत्र में जाकर कबाड़ एकत्र करने वालों से साक्षात्कार लिया गया तथा उनके जवाब के आधार पर आँकड़े तैयार किये गये हैं।

3. प्राथमिक आँकड़ों का संकलन - इस चरण में एकत्र किये गये प्राथमिक आँकड़ों को तालिकाबद्ध करना, उनका विश्लेषण, कार्टोग्राफिक प्रस्तुतीकरण तथा अंततः शोध-पत्र तैयार करना शामिल है।

अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र पटना नगरीय क्षेत्र है। परन्तु साक्षात्कार के लिए निम्न आठ इलाकों से 50 कबाड़ एकत्र करने वालों को चुना गया-स्टेशन, बोरिंग रोड, दीधा, एस.के.पुरी, राजापुल, गाँधी मैदान, आशियाना, कोयरी टोला ।

व्यक्तिगत जानकारी:

कबाड़ चुनने वालों के अस्तित्व तथा सामाजिक विकास में उनके योगदान को अक्सर नजर अंदाज कर दिया जाता है। गरीबी, अशिक्षा एवं रोजगार के अन्य अवसरों की अनुपलब्धता की वजह से वे इस काम की ओर उन्मुख होते हैं। इनकी आर्थिक दशा बेहद कमजोर होती है तथा वे सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से भी काफी असुरक्षित हैं। ये गरीबी, अशिक्षा, गंदगी, अव्यवस्था, अंधविश्वास, दुर्व्यसनों आदि के शिकार होते हैं। ये अपने अधिकारों तथा मिलने वाली सुविधाओं से भी अनभिज्ञ होते हैं।

(Study of ragpickers, Seker, Helen, R, 1997)

कबाड़ चुनने वाले 'कचरा प्रबंधन' में अहम भूमिका निभाते हैं क्योंकि ये पुन:चक्रणीय वस्तुओं को चुनते हैं। ये पुन:चक्रण की प्रक्रिया के केन्द्र बिन्दु होते हैं।

कबाड़ चुनने वाले दैनिक कमाई पर निर्भर करते हैं। कभी-कभार स्थिति ऐसी हो जाती है कि उन्हें भूखे पेट सोना पड़ता है। ये लोग साल के 365 दिन काम करते हैं। इनका बीमार पड़ना भी आम है क्योंकि इनका कार्यस्थल बेहद अस्वास्थ्यकर होता है। ये प्रतिदिन औसतन 10-12 धंटे काम करते हैं ताकि दोनों वक्त का भोजन प्राप्त कर सकें। इनकी प्रतिदिन की कमाई 150-200 रूपये तक है। (जनसंख्या, गरीबी एवं उम्मीदें, उत्पन्न प्रकाशन, 1983)

अधिकतर कबाड़ चुनने वाले प्रवासी होते हैं जो आस-पास के ग्रामीण इलाकों से रोजगार की तलाश में शहर या कस्बे में आते हैं।

तालिका 1 : कबाड़ चुनने वालों का मूल स्थल

मूल निवास स्थान	संख्या	प्रतिशत
प्रवासी	25	50
स्थानीय	18	36
अस्थायी निवासी कुल	7	14

स्रोत : क्षेत्र सर्वेक्षण, 2013

कचरा चुनने के काम में लिंग या उम्र का कोई बंधन नहीं है। स्त्री, पुरूष, बच्चे सभी इस कार्य में संलग्न हैं।

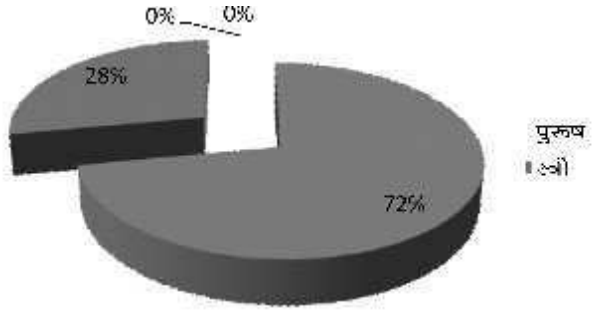

चित्र 1 कचरा चुनने वालों का लिंगानुपात

इस पेशे को अपनाने के लिये किसी प्रकार के कार्यानुभव, दक्षता या प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है और न ही उम्र की कोई सीमा निर्धारित है। इस पेशे में लिप्त लोगों की आयु 6-76 साल है।

तालिका 2 : कबाड़ एकत्र करने वालों की आयु-संरचना

आयुवर्ग	संख्या	प्रतिशत
<14	17	34
14-30	26	52
30-50	5	10
>50	2	4
कुल	50	100

स्रोत: क्षेत्र सर्वेक्षण, 2013

शिक्षा, मानव मात्र को मानव संसाधन में तब्दील करती है। इस शोध पत्र के लिये चुने गये नमूनों में इक्के-दुक्के ही पढ़ना-लिखना जानते थे। 70 प्रतिशत कबाड़ चुनने वाले अशिक्षित हैं। केवल 30 प्रतिशत ही पढ़ना लिखना जानते हैं, जिन्होंने कक्षा 2-3 तक पढ़ाई की है।

कबाड़ चुनने वालों के पास सिर छुपाने के लिये छत नहीं होती । ये या तो खुले आसमान के नीचे रहते हैं या अस्थायी तौर पर झोंपड़ी बना कर रहते हैं। कुछ लोगों ने किराये पर घर ले रखा है, जिसका मासिक किराया 600-700 रूपये तक होता है।

तालिका 3 : मकान की उपलब्धता

मकान	संख्या	प्रतिशत
निजी	11	22
सरकारी	8	16
बेघर	26	52
किराया	5	10
कुल	50	100

स्रोत: क्षेत्र सर्वेक्षण, 2013

पेशागत जानकारी :

कचरा चुनने का कार्य काफी निम्न स्तर का कार्य है। ये लोग दिन भर कूड़े-कचरे के ढेर में से काम की वस्तुओं चुनते हैं, पर उतना ही कमा पाते हैं जिससे सिर्फ उनका पेट भर सके। जो भी इस कार्य में संलग्न हैं, उनमें से अधिकांशत: पूर्णकालिक तौर पर इस कार्य से जुड़े हैं। सर्वेक्षण के दौरान ये बात समाने आई की लगभग 88 प्रतिशत लोग पूर्णकालिक तौर पर इस पेशे से जुड़े हैं, जबकि सिर्फ 12 प्रतिशत ही ऐसे हैं जो इसे 'अल्पकालिक' तौर पर अपनाये हुए हैं। क्षेत्र - सर्वेक्षण के दौरान ये बात भी सामने आई कि अधिकतर कबाड़ चुनने वाले (66 प्रतिशत) अकेले काम करते हैं। बच्चे 3-4 के समूह में कार्य करते हैं। कचरा चुनने वालों की दैनिक आमदनी बेहद कम होती है। उनकी औसत दैनिक आय 100-150 रूपये है । इनकी अधिकांश कमाई दो वक्त का भोजन जुटाने में ही खर्च हो जाती है।

तालिका 4 : दैनिक आय

आयु	संख्या	प्रतिशत
<50	13	26
50-100	21	42
100-150	7	14
150-200	4	8
>200	5	10
dqy	50	100

स्रोत: क्षेत्र सर्वेक्षण, 2013

कबाड़ चुनने वालों को कबाड़ की तलाश में काफी दूरी तय करनी पड़ती है। ये अपने काम की वजह से प्रतिदिन औसतन 4-5 कि.मी. की दूरी तय करते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि एक ही जगह जरूरत के अनुसार कबाड़ नहीं मिल पाता । एकत्र किया गया कबाड़ अलग-अलग दरों पर बेचा जाता है। चुनी जाने वाली वस्तुओं में प्लास्टिक की बोतल प्रमुख है, क्योंकि इनकी विक्रय दर उच्च है तथा इनको चुनना भी आसान होता है ।

तालिका 5 : चुने जाने वाले कबाड़ का विक्रय दर

वस्तु	दर
कागज /गत्ता	30 रू./किलो
शीशा	1 रू./किलो
लोहा	15 रू./किलो
प्लास्टिक	10 रू./किलो

स्रोत : क्षेत्र सर्वेक्षण, 2013

चुनी जाने वाली वस्तुओं का प्रकार कार्य अनुभव पर भी निर्भर करता है। नये-नये संलग्न लोग आसानी से उठायी जाने वाली वस्तुयें चुनते हैं जैसे - बोतल। जबकि अनुभवी, चयनानुसार ज्यादा कीमत वाली वस्तुएँ यथा धातुएँ चुनते हैं। एक दिन में एक कबाड़ चुनने वाला औसतन 7-8 किलो कचरा इकट्ठा कर लेता है।

अधिकांशत: कबाड़ चुनने वाले एक दिन में चुने गये कबाड़ को उसी दिन बेच देते हैं क्योंकि उसी आमदनी से वो उस दिन का भोजन प्राप्त करते हैं। चुने हुए कबाड़ को कबाड़ी की दुकान में बेचा जाता है। सर्वेक्षण के दौरान निम्नलिखित इलाकों में कबाड़ी की दुकाने पाई गई :- स्टेशन, राजापुल, एस. के.पुरी, बोरिंग रोड, आशियाना मोड़ गाँधी मैदान।

स्टेशन पर काफी तादाद में कबाड़ी की दुकाने हैं। आस-पास के इलाके के कबाड़ चुनने वाले यहीं आकर अपना कबाड़ बेचते हैं। ये लोग अपना कबाड़ खुद बेचते हैं, किसी दलाल या बिचौलिये के माध्यम से नहीं ।

सामाजिक - आर्थिक विश्लेषण:

कबाड़ चुनने वालों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति बेहद दयनीय होती है । ये समाज की मुख्यधारा से कटे होते हैं। ये समाज में अवांछित एवं तिरष्कृत होते हैं। दिन भर के कठिन परिश्रम के बावजूद इनकी आर्थिक दशा काफी पिछड़ी होती है। अधिकतर कबाड़ चुनने वाले पिछड़ी तथा अतिपिछड़ी जातियों से आते हैं। इसमें मुसहर तथा डोम प्रमुख हैं।

तालिका 6 : कबाड़ चुनने वालों की जाति

जाति	संख्या	प्रतिशत
S.C	34	68
S.T	4	8
OBC	12	24
General	-	-
Total	50	100

स्रोत: क्षेत्र सर्वेक्षण, 2013

अधिकतर कबाड़ चुनने वाले प्रवासी होते हैं, जो रोजगार की तलाश में आस-पास के ग्रामीण इलाकों से आते हैं। अधिकांशत: ये एकल परिवार में रहते हैं, पर परिवार के कुल सदस्यों की संख्या 8-10 होती है, क्योंकि एक दंपति

को 5-6 बच्चे होते हैं। कुछ कबाड़ चुनने वाले अकेले भी रहते हैं

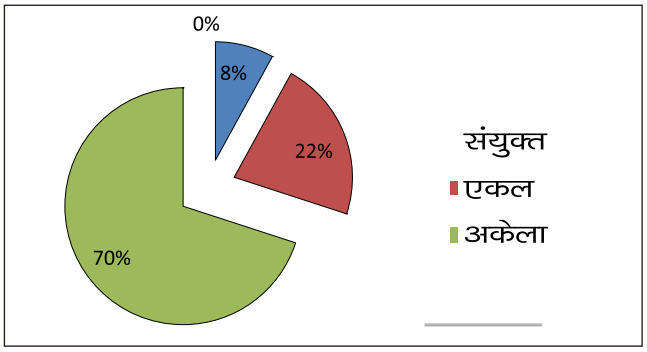

चित्र 2 पारिवारिक परिस्थिति

परिवार की एक दिन की कुल कमाई काफी कम होती है, क्योंकि कमाने वाला एक ही होता है, पर उस पर आश्रितों की संख्या ज्यादा होती है। यह कमाई औसतन 150-200 रूपये प्रतिदिन तक होती है।

कबाड़ चुनने वालों को सामाजिक दायरे से बाहर रखा जाता है। ये सभ्य समाज में अवांछित माने जाते हैं। ये कबाड़ चुनने के लिए गलियों, कूड़ेदानों या आवासीय पसिरों में घूमते हैं। जिस वजह से इन्हें संदिग्ध नजर से देखा जाता है। पुलिस भी इन्हें झोपड़ियों समेत खदेड़ देती है। जहाँ तक अवैध तरीके से पैसे वसूलने का सवाल है, 16 प्रतिशत लोगों ने स्वीकार किया कि गुंडों के साथ पुलिस भी उनसे पैसे वसूलती है।

चूंकि कबाड़ चुनने वाले अलग-अलग जगहों से आते है, इसलिए इनमें संगठनात्मक एकता का अभाव होता है। फलस्वरूप ये सरकारी सहायता से वंचित रह जाते हैं। एकजुटता के अभाव में ये अपनी आवाज संबंधित अधिकारी या सरकारी तक नहीं पहुँचा पाते हैं। अशिक्षा एवं गरीबी की वजह से ये मिलने वाली सरकारी सुविधाओं से भी अनभिज्ञ रहते हैं।

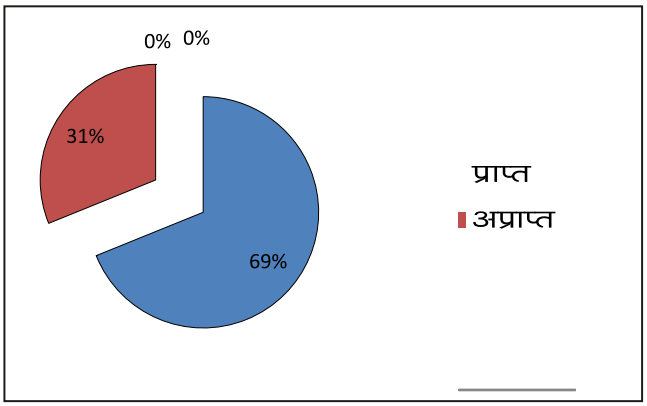

चित्र 3 सरकारी सहायता की उपलब्धता

ये पूछने पर कि क्या कबाड़ चुनने वालों का कोई संगठन है, जो उनकी मांगों को एक मंच प्रदान करे, सारे उत्तर नकारात्मक ही आये। ये किसी सभा, समूह या संगठन से जुड़े हुए नहीं है। ये बस अपने काम से मतलब रखते हैं। कबाड़ चुनने वालों के समाजिक-आर्थिक स्तर में उत्थान के लिए कोई NGO या स्वयं सहायता समूह भी कार्यरत नहीं है। (राम अहुजा, सामाजिक समस्याएँ, 2007)

मनोरंजन के लिये ये धूम्रपान/मदिरापन करते हैं, जुआ खेलते हैं या समूह में बैठ कर बातचीत करते हैं।

तालिका 7 : समाज का सहयोग

सामाजिक सहयोग	संख्या	प्रतिशत
अच्छा	-	-
उदासीन	12	24
संतोषप्रद	2	4
बुरा	36	72
कुल	50	100

स्रोत :- क्षेत्र सर्वेक्षण, 2013

स्वच्छता एवं स्वास्थ्य :

कूड़े के ढ़ेर में से उपयोगी वस्तुएँ चुनना अपने आप में ही काफी अस्वास्थ्यकर कार्य है। जिन वस्तुओं को अनुपयोगी समझ कर या सड़-गल जाने पर हम फेंक देते हैं, उन्हीं गंदगी के ढ़ेर में ये अपने जीविकोपार्जन का मार्ग ढूढ़ते हैं। ये नंगे हाथों कूड़ेदानों से सामान उठाते हैं, जो काफी खतरनाक है क्योंकि टूटी-फूटी वस्तुओं से कट-फट जाने की संभावना रहती है।

अधिकतर कबाड़ चुनने वाले झुग्गी-झोपड़ियों में रहते हैं, जो अधिकांशत: कूड़े के ढ़ेर के आस-पास होती हैं। ये काफी तंग होती हैं। इनमें हवा या रौशनी आने की व्यवस्था नहीं होती है।

तालिका 8 : आवासीय परिस्थिति

घर का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
पक्का	5	10
कच्चा	9	18
आधा कच्चा	19	38
अस्थायी	17	34
कुल	50	100

स्रोत :- क्षेत्र सर्वेक्षण, 2013

कुछ को पक्का घर 'इंदिरा आवासीय परियोजना के तहत मुहैया कराये गये हैं। स्वच्छता एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से शौचालय की उपलब्धता बेहद जरूरी है। परन्तु सिर्फ 20 प्रतिशत कबाड़ चुनने वालों को ही शौचालय उपलब्ध है।

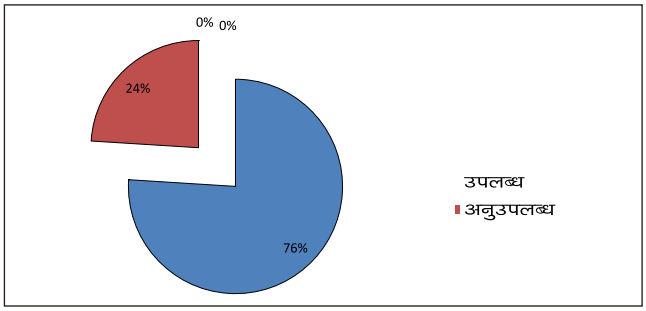

चित्र 4 शौचालय की उपलब्धता

स्वस्थ शरीर के लिये स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता भी बेहद जरूरी है। गंदा पानी पीने से कई तरह की बिमारियाँ हो सकती हैं। परन्तु सिर्फ 44 प्रतिशत कबाड़ एकत्र करने वालों को ही स्वच्छ पेयजल प्राप्त है।

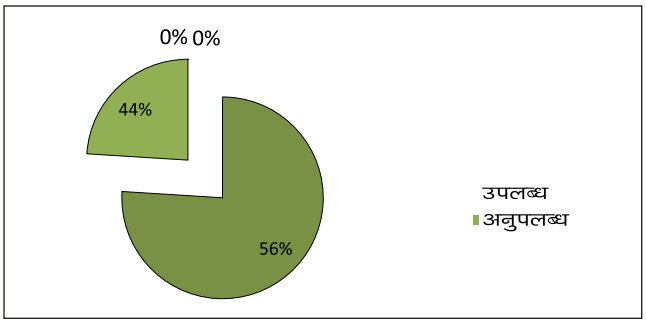

चित्र 5 स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता

तालिका 9 : पेयजल के स्रोत

स्रोत	संख्या	प्रतिशत
नगर निगम	30	60
निजी	8	16
कुँआ/ नदी	8	16
अन्य	4	8
कुल	50	100

स्रोत: क्षेत्र सर्वेक्षण, 2013

अधिकांशत: कबाड़ चुनने वालों को (60 प्रतिशत) पेयजल नगर निगम द्वारा उपलब्धता कराया जाता है।

चूंकि कबाड़ चुनने वालों का कार्यस्थल अत्यंत दूषित एवं अस्वास्थ्यकर होता है, इसलिए ये बहुत सी बिमारियों से ग्रसित रहते हैं, जिनमें डायरिया, बुखार, टी.बी., मलेरिया, दमा, त्वचा संक्रमण, श्वास संबंधी बिमारियाँ इत्यादि प्रमुख हैं। चूँकि कबाड़ चुनने वाले बेहद गरीब होते हैं, अत: अस्वस्थता की स्थिति में ये निजी अस्पताल नहीं जा सकते। सरकारी अस्पतालों की हालत भी बदतर होती है। डॉक्टरों की अनुपस्थिति, बेहतर चिकित्सा का अभाव, सीटों की कमी आदि वजहों से ये अस्पताल जाने की बजाय दवा की दुकानों से दवा खरीद कर खा लेते हैं।

सर्वेक्षण के दौरान ये बात पता चला कि मात्र 40 प्रतिशत लोग ही सरकारी स्वास्थ्य सुविधा से लाभान्वित हो पाते हैं।

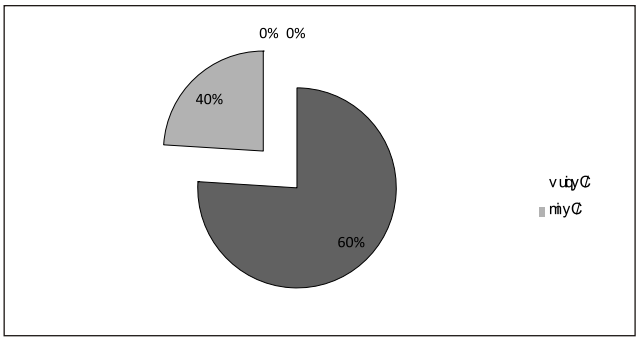

चित्र 6 सरकारी स्वास्थ्य सुविधा की उपलब्धता

ये लोग या तो पी.एम.सी.एच., आई.जी.आई.एम.एस., पटना एम्स या किसी अन्य सरकारी अस्पताल में जाते हैं।

कबाड़ चुनने की प्रक्रिया तथा बाल-श्रम:

बाल श्रम एक वैश्विक समस्या है। बच्चे मुख्यत: धरेलू नौकर के तौर पर होटलों या ढ़ाबों में, जूता पॉलिश, फेरी या मरम्मत करने वाली दुकानों में सहायक के तौर पर कार्य करते हैं। लेकिन बच्चों के लिए कबाड़ चुनने का कार्य सबसे हानिकारक होता है, क्योंकि वातावरण का स्वास्थ्य पर सीधा असर पड़ता है। इन्हें एक नजर में देख कर ही इनकी गरीबी तथा अभाव का पता चल जाता है।

बहुत से कारण हैं जिनकी वजह से बच्चे कबाड़ चुनने जैसे कार्य से जुड़ते हैं। इस धंधे में उम्र का कोई बंधन नहीं होता। इस धंधे से जुड़ना तथा छोड़ना आसान तथा मनमुताबिक

होता है। इसमें शिक्षा या प्रशिक्षण की जरूरत भी नहीं होती। ये चिंताजनक बात है कि जिस उम्र में बच्चों को स्कूल में पढ़ना या खेलना चाहिए, वे कबाड़ चुनने जैसा अस्वास्थ्यकर कार्य करते हैं। कबाड़ चुनने वालों की कुल जनसंख्या में बच्चों का प्रतिशत 34 प्रतिशत है, जिनकी उम्र 14 साल से कम है। (India 2010,Chapter -21)

सुबह-सुबह ही ये बच्चे नंगे पांव पीठ पर बोरा लटकाये कबाड़ चुनने निकल पड़ते हैं। वे दिन भर में 40-50 रूपये कमा पाते है।

बच्चे अधिकांशत: परिवार के दबाव में ये कार्य करने को मजबूर होते हैं। परिवार की दैनिक आमदनी बढ़े इसलिए वे बच्चों को भी इस धंधे में लगा देते हैं। इनमें से अधिकतर बच्चे स्कूल नहीं जाते । कुछ अनाथ या घर से भागे हुए भी होते हैं। ये किसी कबाड़-क्रेता के लिए काम करते हैं। एक आँकड़े के अनुसार पटना में कबाड़ चुनने वाले बच्चों में 84 प्रतिशत लड़के हैं। इनमें से 14 प्रतिशत प्रवासी हैं। जबकि 86 प्रतिशत दूसरी या तीसरी पीढ़ी के प्रवासी है।

ये बच्चे, गर्मी, बारिश, धूल, सड़क, दुर्घटना, हिंसा आदि के शिकार होते हैं। कभी -कभार असामाजिक तत्व मानकर इन्हें बाल सुधार गृहों में भेज दिया जाता है। ये माता-पिता के समुचित प्यार तथा मार्ग दर्शन से वंचित रह जाते हैं। ये स्कैबिज, जूँ, क्रॉनिक डिसेन्ट्री, फेफड़े, कान, नाक तथा गले के संक्रमण, घाव तथा खरोंच इत्यादि से पीड़ित होते हैं। ये सभी बिमारियाँ गरीबी, कुपोषण तथा अस्वास्थ्यकर वातावरण के कारण होती हैं।

निष्कर्ष :

पटना में किया गया यह क्षेत्र-अध्ययन ये दर्शाता है कि कबाड़ चुनने की क्रिया शहरी गरीब तबके की एक मुख्य आर्थिक क्रिया है। इनमें मुख्यत: जनसंख्या के आर्थिक तौर पर सक्रिय वर्ग के लोग शामिल हैं। ये बेहतर भविष्य की आशा में शहर में आते हैं। परन्तु रोजगार के अन्य अवसरों की अनुपलब्धता के कारण इस कार्य में संलग्न हो जाते हैं। चूंकि कबाड़ चुनने का कार्य असंगठित आर्थिक क्षेत्र की क्रिया है। अतएव ये पैसा कमाने का सबसे आसान तथा शीध्र तरीका है, जिसमें कानूनी अड़चनें भी नहीं रहती । साक्षात्कार में शामिल 50 में से 30 प्रतिशत लोग अपने काम से संतुष्ट थे, जबकि 64 प्रतिशत लोग अपने काम के प्रति उदासीन थे। पर सभी ने इस बात को स्वीकार किया कि इस काम ने पटना जैसे शहर में इन्हें जीविका का एक साधन प्रदान किया । संगठित औद्योगिक बाजार अर्थतंत्र में वस्तुओं के पुन: उपयोग के चक्रिय प्रक्रिया में कबाड़ चुनने की प्रक्रिया एक प्रमुख तत्व है। पर अभी तक न ही सरकार ने और न ही समाज ने शहर के अर्थव्यवस्था तथा वातावरण की रक्षा में इनके योगदान को स्वीकार किया है।

यद्यपि कबाड़ चुनने वाले प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में ठोस कचरा प्रबंधन में जुड़े हैं पर कानूनी संगठन तथा सामाजिक जागरूकता के अभाव में इनकी आवाज अनसुनी रह जाती है । अधिकतर कचरा चुनने वाले अशिक्षित तथा ग्रामीण प्रवासी होते हैं। अत: उनमें स्वच्छता तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अभाव होता है। फलस्वरूप ये कई प्रकार की बिमारियों से ग्रस्त होते हैं।

सुझाव :

शहर की अर्थव्यवस्था के विकास के लिये असंगठित तथा संगठित दोनों क्षेत्रों की इकाईयों का परस्पर कार्य करना बेहद आवश्यक है, क्योंकि ये दोनों एक दूसरे की पूरक हैं। इसलिए कबाड़ चुनने के कार्य तथा कबाड़ चुनने वालों को व्यर्थ समझने की बजाय हम उन्हें समाज के एक हिस्से के रूप में स्वीकार करना चाहिए । सरकार की तरफ से नीति निर्माण के स्तर पर ही कदम उठाने से नगरीय अर्थतंत्र में कबाड़ चुनने वाले लोग समन्वित होंगे तथा उनके जीवन स्तर में भी सुधार होगा।

कानूनी संस्थान :

इस अध्ययन से यह पता चला है कि कबाड़ चुनने वालों के कार्य की निगरानी तथा निर्देशित करने वाले संस्थानों की सर्वथा अनुपस्थिति है। कबाड़ चुनने की प्रक्रिया को निर्देशित तथा प्रबंधित करने के लिए सरकार की तरफ से औपचारिक पहचान की सख्त जरूरत है। इसके लिए रेखीय संगठनों यथा नगर निगम, स्थानीय विकास मंत्रालय, भौतिक योजना एवं कार्य मंत्रालय, श्रम तथा परिवहन मंत्रालय को अपने-अपने कार्य की जिम्मेवारी में विशिष्ट होना पड़ेगा तथा उन्हें आपस में भी सामंजस्य स्थापित करना पड़ेगा। प्रमुख मंत्रालय, जो कबाड़ चुनने वालों के कानूनी फ्रैमवर्क को परिभाषित कर सकते हैं निम्नलिखित है:-

	मंत्रालय	कार्यान्वयन हेतु योजनायें
1.	भौतिक योजना एवं कार्य मंत्रालय	सामाजिक आर्थिक उत्थान के द्वारा भौतिक उन्नयन
2.	श्रम एवं परिवहन	कबाड़ चुनने वालों को एक श्रमिक के तौर पर उनके अधिकारों को परिभाषित करना ताकि उनके मानवाधिकारों की रक्षा हो सके।
3.	स्थानीय विकास मंत्रालय	नगर निगम के कार्य सक्रियता को परिभाषित करना ताकि निगम कबाड़ चुनने वालों के उन्नयन हेतु कार्य कर सके।
4.	नगर निगम	कार्यान्वयी तथा समयावधिक योजनाओं के द्वारा कबाड़ चुनने वालों को मंच प्रदान करना तथा उन्हें कचरा प्रबंधन का एक हिस्सा बनाना।

References :

Anuja Ram (2007). *Social Problems in India*. Rawat Publications, Jaipur • New Delhi • Mumbai • Hyderabad • Guwahati.

Arimpor, J. (1992). *Street Children of Madras : A Situational Analysis*. Child Labour Cell National Labour Institute, Noida.

Devi L. (1998). *Child Labour, Encyclopedia of Child and Family Welfare Series* : Institute for Sustainable Development, Anmol Publication Pvt. Ltd., New Delhi.

Sekhar, Helen R. (1997). *Child Labour Legislation in India : A Study in Retrospect and Prospect*, National Resource Center on Child Labour, V.V. Giri National Labour Institute, NOIDA.

Singh A.N. (1980). *The Child Rag Pickers : Socio-Economic Perspectives and Investigation Strategies,* Shipra Publication, New Delhi.

Rialp, V. (1993). Children in Hazardous Work in the Philippines, International Office, Geneva.

Tripathi. S.N. (1996). *Child Labour in India : Issues and Policy Options*. Discovery Publication House, New Delhi.